गीत खुशी के पंछी गाना

(बाल-कविताएँ)

बलदाऊ राम साहू

आलोक प्रकाशन

गीत खुशी के पंछी गाना

बाल-कविताएँ

बलदाऊ राम साहू

C - बलदाऊ राम साहू - 2019

आलोक प्रकाशन

सभी हँसते-खिलखिलाते
नन्हे-मुन्नों को समर्पित

अपनो से

बाल-कविताओं की सहजता बच्चों को बरबस अपनी ओर आकर्षित करती है। वास्तव में बाल.कविताओं का संसार अपने आप में अनोखा और अकल्पनीय होता है। जहाँ तक हमारी सोच नहीं पहुँच पाती उससे भी आगे की बात बाल कविताओं में देखी जा सकती है।

बच्चों के लिए तो पूरा संसार उत्सवी होता है क्योंकि उनकी दुनिया में कभी भी निराषा का प्रवेष हो ही नहीं सकता। वे हर-पल, हर-समय उत्सुक, चंचल रहते हैं। वे सदा बात करने के लिए तत्पर रहते हैं, वे तो निर्जीव संसार से भी बातें करते हैं और उन्हें ऐसा करने कोई भी रोक नहीं सकता।

बच्चों की दुनिया से जुड़ना कितने सौभाग्य की बात है। जब भी मुझे बाल-कविताओं के माध्यम से ही नहीं, प्रत्यक्ष रूप से भी उनकी दुनिया से जुड़ने का अवसर मिलता है तो मैं अपने भाग्य पर इठलाता हूँ। बच्चों की क्रियाओं में सम्मिलित होना, उनसे बातें करना, उन्हें अकेले में क्रिया करते हुए देखना मुझे आज भी अच्छा लगता है। उनकी चंचल क्रियाएँ और सहज, सरल मन मुझे बरबस ही अपनी ओर खींच लेता है।

बच्चों के साथ काम करना और बच्चों के लिए काम करना दोनों ही मजेदार है। प्राथमिक शिक्षक से एस.सी.ई.आर.टी. तक काम के सफर में बच्चों के लिए किए काम ने मुझे बहुत सारी अनुभूतियाँ दी हैं। इन्हीं अनुभूतियों के कुछ अंशो को समाविष्ट करने की एक छोटी-सी कोशिश है मेरी ये कविताएँ।

बाल-कविताएँ बच्चों के मन को गुदगुदाती भी हैं और उन्हें प्रेरणा भी देती हैं। **'गीत खुशी के पंछी गाना' (बाल-कविता)** के इस संग्रह में दोनों ही तरह की कविताओं का समावेश करने का प्रयास किया गया है।

आशा करता हूँ कि मैं इन बाल-कविताओं के माध्यम से बच्चों के और निकट बेहतर ढंग से पहुँच पाऊँगा।

आपका स्नेहाकांक्षी

बलदाऊ राम साहू

चिड़िया

चिड़िया चुन-चुन तिनके लाती,
फिर उनसे वह नीड़ बनाती।

रोज सजाती सुंदर सपने
बैठ घोंसले में वह अपने।

दाने चुनकर लाती है वह
बच्चों को चुगवाती है वह

फिर वह 'पर' फैलाती है,
अंबर में उड़-जाती है।

टॉमी

टॉमी बड़ा रौबीला है
चितकबरा छैल-छबीला है।

जब कोई घर पर है आता
टॉमी उसको दूर भगाता।

थोड़ा दे दो चुप हो जाता
थोड़े में ही धूम मचाता।

बाहर सरपट दौड़ लगाता
बिल्ली की शामत बन जाता।

घर की चौकीदारी करता
नहीं किसी से भी वह डरता।

सब पर वह है रौब जमाता
रोटी दे दो पूँछ हिलाता।

बच्चों का घोड़ा बन जाता
अजनबियों का शेर कहाता।

अनोखे पेड़

ये पेड़ हैं बड़े अनोखे
जिसमें फल लगते हैं चोखे
पेड़ा, बर्फी, लड्डू चूरमा
इनको खाते बड़े हैं सूरमा

काजल बिंदी सभी लगाते
सुंदर-सुंदर गीत सुनाते
खेल-तमाशे, नाच दिखाते
बिल्कुल भी नहीं शरमाते।

पढ़ने को स्कूल नहीं जाते
पर दुनिया को खूब सिखाते
कभी नहीं आपस में लड़ते
फिर भी शूरवीर कहलाते।

गीत खुशी के पंछी गाना

आसमान पर उड़ते जाना
गीत खुशी के पंछी गाना।
पंखों की वह गति मत खोना
और कभी तुम थक मत जाना।

मत डरना तुम बाधाओं से
हरदम आगे बढ़ते जाना।
रोक सके ना कोई तुमको
साहस के पथ गढ़ते जाना।

आँधी आये या तूफान
डटकर टक्कर ले लेना तुम।
खुशियाँ हो जब आसपास
हँसकर आगे बढ़ना तुम।

लगते बड़े निराले

सूरज, चंदा आसमान में
और अनोखे तारे।
रहते ये सब साथ-साथ हैं
लगते बड़े निराले।

एक दूसरे से जुड़कर रहना
है इनकी पहचान।
नील-गगन की हैं परिभाषा
हमको देते ज्ञान।

ब्रह्मांड का एक सदस्य है
अपनी प्यारी धरती।
जो दुनिया को जीवन देती
सबका पालन करती।

बंदर जी, भाई बंदर जी

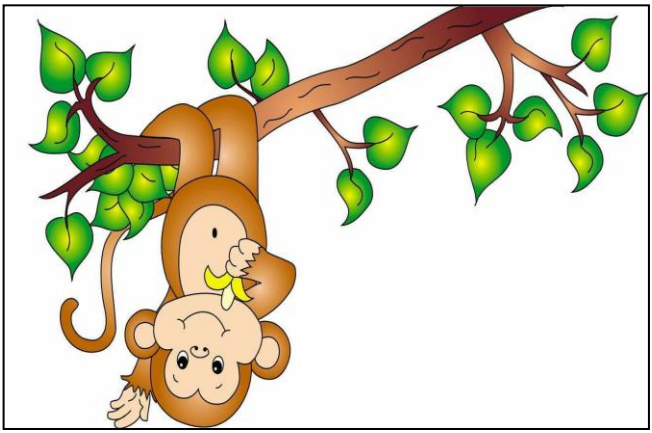

बंदर जी, भाई बंदर जी
क्यों नहीं रहते अंदर जी।
क्यों बारिश में भीग रहे
बार-बार क्यों छींक रहे?

उल्टा-सुल्टा खाते हो
यहाँ-वहाँ क्यों जाते हो?
घाट-घाट का पानी पीते
इसीलिए पछताते हो।

एक बात अब मेरी मानो
सबको तुम अपना जानो
नेक काम तुम करना सीखो
हरदम आगे बढ़ना सीखो।

बीत गए दिन छुट्टी के

बीत गए दिन छुट्टी के
बच्चो, करो पढ़ाई तुम।

बस्ते से अब नाता जोड़ो
आलस को तुम दूर भगाओ।
खूब किया तुमने सैर-सपाटा
अब पढ़ने में चित्त लगाओ।

खेल-तमाशे, धूम-धड़ाके
से, कर लो अब कुट्टी।
समझ बनाओ, ज्ञान बढ़ाओ
अब काहे की छुट्टी।

झरना

चट्टानों से बहते रहते
झर-झर झरने झरते।
आगे बढ़ते ही रहते हैं
कभी नहीं ठहरते।

कहता है झरना सबसे
बढ़ो निरन्तर आगे।
जो रूक जाते आधी राह
होते बड़े अभागे।

तारे टिमटिम करते हैं

तारे टिमटिम करते हैं
सारी-सारी रात
चंदा मामा को घेरे रहते
खत्म न होती बात।

सूरज दादा के आते ही
झट वे छिप जाते हैं।
पूरे दिन वे गुमसुम रहते
संध्या को खिल जाते हैं।

गरमी आई

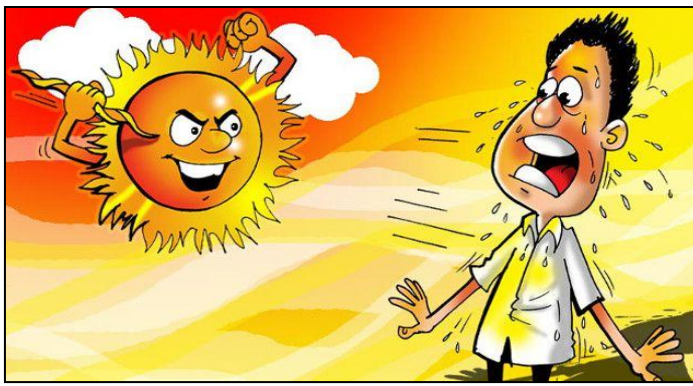

गरमी आई
बहा पसीना
अब तो हो गया
मुश्किल जीना।

सूरज लगा
आग उगलने
अपनी धरती
लगी है जलने।

मानो हवा
दुबककर बैठी
जैसे डरती
मुनिया, चैती।

चलो-चलो हम
चलें बुलाने
बरसा के
बादल को लाने।

इन्द्रधनुष

बारिश के बादल जब आते
इन्द्रधनुष तब छटा दिखाते
सात रंगों से सज-धजकर
सबका मन सदा लुभाते।

तोरन द्वार लगाए जैसे
आसमान में ये लगते
चंचल लगते बच्चों जैसे
पल में दिखते, पल में छुपते

बार-बार मेरा मन करता
इन्द्रधनुष को तोड़ लाऊँ
अपने घर के आँगन में
सुंदर-सा इसे सजाऊँ।

मेरा गाँव

मेरा प्यारा
सुन्दर गाँव
सबसे न्यारा
मेरा गाँव।

उबड़-खाबड़
पगडंडी वाला
सीधा-साधा
मेरा गाँव।

श्रम की पूजा
करने वाले
किसानों का
मेरा गाँव।

चकाचौंध से
अब भी दूर
है प्यारा-सा
मेरा गाँव।

आम के पेड़

पीपल, जामुन, आम के पेड़
ये है बड़े काम के पेड़।

शुद्ध हवा हमको ये देते,
बदले में प्रदूषण ले लेते।

गरमी, सर्दी, बारिश सहते,
फिर भी कमी कुछ न कहते।

खट्टे, मीठे फल देते हैं,
सबको सुंदर कल देते हैं।

हम सब मिलकर पेड़ लगाएँ
अपना जीवन सफल बनाएँ।

नीले-पीले-लाल गुब्बारे

नीले-पीले-लाल गुब्बारे
लगते हैं सब प्यारे-प्यारे
कुछ चितकबरे कुछ हैं काले
अंबर में उड़ते मतवाले।

हवा भरो तो तन जाते हैं
बिन पंखों के उड़ जाते हैं
इन्हें देख बच्चे ललचाते
फूट जाएँ तो सब पछताते।

चिड़िया रानी

उड़कर आओ चिड़िया रानी
गीत सुनाओं चिड़िया रानी
पास हमारे तुम आओ ना
बातें तुम कुछ बतलाओ ना।

छोटे.छोटे हैं पंख तुम्हारे
कितने कोमल कितने न्यारे
हमसे तुम मत घबराओ ना
मीठे गीत तुम सुनाओ ना।

गुडिया रानी उठो-उठो

गुडिया रानी उठो-उठो,
सुबह हुई अब उठो-उठो।

सूरज जी घर आये हैं
धूप सुनहरी लाये हैं।

चिड़िया भी गाना गा रही
तुमको ही वह जगा रही।

आलस तुम अब करो नहीं
स्कूल जाओ, डरो नहीं।

वो जंगल के राजा शेर

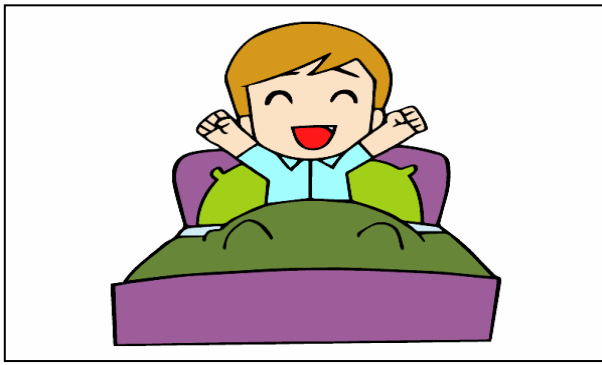

वो जंगल के राजा शेर
जल्दी उठो, मत करो देर।

अगर देर से काम करोगे
आलस और आराम करोगे।

फेल तुम्हीं हो जाओगे
आलसी तुम कहलाओगे।

सोच समझ कर काम करोगे
जग में अपना नाम करोगे।

मीठे-मीठे काले जामुन

मीठे-मीठे काले जामुन
मजेदार रसवाले जामुन।

बारिश के दिनों में आते
बच्चे बूढ़े सबको ललचाते।

पके-पके हम फल खाएँगे
उनका गुण हम बतलाएँगे।

चलो-चलो एक पेड़ लगाएँ
मतलब हम सबको समझाएँ।

ठेले वाले, ठेले वाले

ठेले वाले, ठेले वाले,
आम, संतरा, केले वाले।

सेब अनार हमको दे दो,
बदले में तुम पैसे ले लो।

बड़े मजे से खाएँगे हम,
सेहत स्वयं बनाएँगे हम।

खेले-कूदे शोर मचाएँ
फिर भी हम अव्वल आएँ।

हमको खूब ईनाम मिलेगा,
मान बहुत सम्मान मिलेगा।

बड़े रसीले होते आम

बड़े रसीले होते आम
कुछ सस्ते, कुछ महँगे दाम।

चौसा और दशहरी, लँगड़ा
तरह-तरह के इनके नाम।

एक कहावत सुनी है हमने,
आम के आम, गुठलियों के दाम।

चूहे जी चले हम दिल्ली

चूहे जी चले हम दिल्ली,
डरी हुई है मोटी बिल्ली।

ताकतवर कुत्ते हुए अब
शेर-शेरनी सोये हुए सब।

हम सब कुनबे एक बनाएँ,
ओहदेदार नेता बन जाएँ।

क्यों रोती हो गुड़िया रानी

क्यों रोती हो गुड़िया रानी
सुन लो तुम इक नई कहनी।

अच्छे बच्चे नहीं सताते,
हँसते-हँसते ही सो जाते।

अब जरा-सा तुम मुस्काओ।
गुस्से में मत मुँह बिचकाओ।

क्यों करती हो आनाकानी।
मान भी जाओ गुड़िया रानी।

कहती है दादी

चटर-पटर मत खाना भैया,
यह बतलाती हैं दादी।

खटर-पटर मत करना भैया,
यह समझाती हैं दादी।

इधर-उधर मत जाना भैया,
यह सिखलाती हैं दादी।

पटर-पटर मत कहना भैया,
यह गुर सिखाती हैं दादी।

मन में रखना नेक इरादे,
हरदम समझतीं हैं दादी।

मेरी कार में चक्के चार

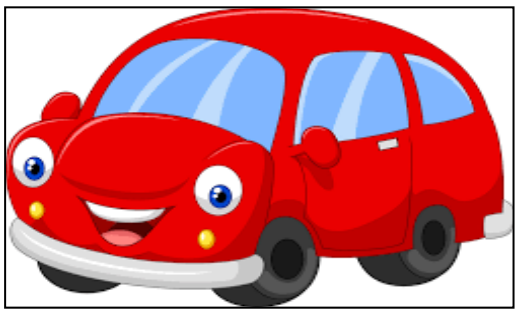

मेरी कार में चक्के चार,
तेरी गुड़िया है बेकार।

डगमग-डगमग चलती है,
गिरती है, लुढ़कती है।

मैं ना दूँगी अपनी कार,
क्यों ले लेती है हर बार।

चीते, भालू सब हैं फेल,
भले दिखाएँ अद्‌भुत खेल।

इक नई कार और लाऊँगा,
तुम्हें घुमाने ले जाऊँगा।

दूर-दूर तक जाती सड़कें

दूर-दूर तक जाती सड़कें,
मंजिल तक पहुँचाती सड़कें।

अलग-थलग गाँव कभी था,
शहरों से मेल कराती सड़कें।

हमराही- सा साथ निभाती ,
पर पीछे रह जाती सड़कें ।

भारी-भारी वाहन हो लेकिन,
भार सभी का सह जाती सड़कें।

कितनी दयावान हैं वे पर,
कभी नहीं जताती सड़कें ।